RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

अनुवाद विज्ञान की संकल्पना

डॉ.दत्तात्रय सदाशिव अनारसे
श्री आर.आर. पाटील महाविद्यालय, सावळज
ता.तासगांव जि.सांगली

भारतीय संस्कृति का स्त्रोत एवं राष्ट्रभाषा हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा का अध्ययन यद्यपि उसके नियमबध्द व्याकरण की दुरूहता के कारण कठिन हो गया है । तथापि इस तथ्य को तो सभी देश – विदेशी भाषा विशारदों ने स्वीकार किया है कि संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यत्न वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित है । वाक्य रचना में भाषा का प्रयोग होता है । भाषा ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मानव – समाज अपने भाव और विचार दूसरों पर प्रकट करता है । भाषा में वाणी का ही नहीं, अपितु संकेतों का भी समावेश है । लिखने और बोलने में हम भाषा का ही प्रयोग करते है ।

आज साहित्यकार बहुत है और साहित्य सृजन बहुत कम । लेखक बहुत लेकिन लेखन कम । हर लेखन को साहित्य माना जाना और हर लेखन कर्ता को लेखक समझा जाना वर्तमानकालीन साहित्य जैसे क्षेत्र की भयावह समस्याओं में से एक है । अनुवाद करने हेतु साहित्यिक रचनाओं का चयन करते समय अगर अनुवादक नजर अंदाज करता हो तो न अनुदित रचना का स्वागत होगा और न ही लक्ष्य भाषा के साहित्य में वृध्दि होगी । रचना चाहे साहित्यिक हो, चाहे साहित्येत्तर उसका अनुवाद लक्ष्य भाषा–भाषी समाज और राष्ट्र के लिए निश्चय ही उपयोगी सिध्द होता है ।

मानव जीवन में बुध्दि का महत्व असाधारण है परंतु भाव के बिना कोरी बुध्दि जीवन को शुष्क, एकांगी और निरस बनाती है । किन्तु दोनों के सुन्दर समन्वय से मानव जीवन हमेशा समृध्दि और आनंद की ओर अग्रसर रहा करता है । अत : साहित्य में भी भाव एवं बुध्दि का महत्व समान रूप से स्वीकृत है । साहित्य सामग्री के अनुवाद से एक भाषा – भाषी समाज के भाव एवं बुध्दि से दूसरे भाषा–भाषी समाज के लोग परिचित होते है ही साथ ही तुलनात्मक अध्ययन, आत्मपरीक्षण, मानवता, एकात्मता और सहिष्णुता के लिए मदद मिलती है । अतः साहित्यिक सामग्री का अनुवाद निश्चिय उपयुक्त सिध्द होता है ।

विगत कई वर्षो के अध्ययन, अध्यापन, लेखन, चिंतन एवं अनुवाद कार्य का यह अनुभव बताता है कि 'अनुवाद क्या है' विषय को लेकर इस क्षेत्र के विद्वानों में जितने मत – मतांतर है उतने किसी दूसरे को लेकर नही । भारतीय दृष्टि से '' मौलिक लेखन आसान है पर अनुवाद करना बहुत कठिन होता है ।'' अनुवाद कार्य '' एक व्यक्ति की आत्मा को दूसरे में डालने के समान असंभव है ।'' तथा पाश्चात्य दृष्टि से '' काव्य के अनुवाद का विचार ही विवेकहीन और असंभव है ।'' अनुवादक द्रोही होता है तक के अनुवाद विषयक विचार देखने से इस विषय की विवादास्पदता स्पष्ट होने में कोई कठिनाई बाकी नहीं रहती । लेकिन एक बात जैसे मैंने अनुभूति और अध्ययन के आधार पर तीव्र तासे एवं कटू सत्य के रूप में महसूस किया वह यह कि अनुवाद विषय का गंभीर एवं सूक्ष्म अध्ययन बिना किये इस विषय के बारे में प्रायः अधिक लोगों के द्वारा मत प्रकट किये है । आधुनिक काल मे साहित्य की अन्य विधाओं की तरह अनुवाद को भी एक रचनात्मक विधा माना जाने लगा । ज्ञान – विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में जो मौलिक चिंतन हो रहा है, या विभिन्न भाषाओं में जो साहित्य रचा जा रहा है, उस तक पहुँचने का एक प्रमुख साधन अनुवाद ही है । इसी कारण अनुवाद को लेखन की एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में मान्यता मिल गयी । इस महत्व को स्पष्ट करते हुए अवधेश मोहन गुप्त लिखते है, '' वर्तमान युग में इलेक्ट्रानिकी की भांति, अनुवाद आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए अपरिहार्य हो गया है । आनेवाले 10 – 15 वर्षो में जो देश इलेक्ट्रानिकी एवं अनुवाद के मामले में पिछड जायेंगे वे संभवतः हर दृष्टि से पिछड जायेंगे ।

अनुवाद में दो भाषाओं को होना जरूरी है । इन दो भाषाओं को अनुवाद विज्ञान में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की संज्ञा दी गयी है । जिस भाषा की सामग्री अनुदित होती है वह स्त्रोत भाषा कहलाती है और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है वह लक्ष्य भाषा कहलाती है । अनुवाद मानव की मूलभूत एकता का, व्यक्ति चेतना एवं विश्व चेतना का अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है । विश्व संस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया में विचारों के आदान – प्रदान का बडा हाथ रहा है और यह आदान–प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो सका है ।

अनुवाद विज्ञान है या नहीं? इसकी चर्चा करने से पहले इसे समझ लेना चाहिए कि विज्ञान क्या है? अर्थात – विज्ञान का अर्थ किसी विषय का व्यवस्थित एवं पारिभाषित ज्ञान, उस ज्ञान की किसी शाखा अथवा उसके किसी

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

विषय पर अर्जित ज्ञान को कहते है । वस्तृतः इसे अर्थ में नृविज्ञान, समाज विज्ञान, भाषा विज्ञान आदि को विज्ञान माना जाता है । अनुवाद को अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की शाखा माना जाता है । इसी अर्थ में उसे विज्ञान भी माना जाता है, न कि भौतिकी – रसायन शास्त्र के अर्थ में । वास्तविक अनुवाद करने के पूर्व की चिंतन प्रक्रिया तुलनात्मक अथवा व्यतिरेकी भाषा – विज्ञान पर पूर्णतः आधारित होती है । इस दृष्टि से भी अनुवाद को विज्ञान मानना उचित है । भाषा विज्ञान के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया में पहले स्त्रोत भाषा के पाठय का विश्लेषण किया जाता है, तत्पश्चात स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का वैज्ञानिक पध्दति से तुलनात्मक अध्ययन कर उनके बीच पायी जाने वाली समानताओं और असमानताओं का पता लगाया जाता है । इसके बाद प्राप्त अर्थ का विश्लेषण के माध्यम से पाठ के रूप में पुनर्गठन किया जाता है । अनुवाद यह प्रक्रिया बौध्दिक रूप से घटित है और पूर्णतः वैज्ञानिक प्रक्रिया है और यही अनुवाद की मूल प्रक्रिया है । इसके अभाव में अनुवाद नहीं हो सकता ।

आज स्थिति स्पष्ट है कि कोई अनुवाद को विज्ञान मानता है तो कोई कला, कोई शिल्प मानता है, तो कोई कौशल, कौई अनुसृजन मानता है तो कोई पुनः सृजन यही नहीं एक ही विद्वान इसे अपने एक ग्रंथ में 'अनुवाद विज्ञान' शीर्षक से परिभाषित करता है । तो दूसरे ग्रंथ में 'अनुवाद कला' शीर्षक से व्याख्यायित करता है । जो भी हो, परिणाम स्पष्ट है कि ' अनुवाद क्या है ?' यह प्रश्न बडा विवाद का विषय बनता है । ' वद' धातु तथा 'अनु' उपसर्ग के योग से बने 'अनुवाद' शब्द में स्थित 'वद' का अर्थ है 'कथन' और 'अनु' का अर्थ है 'पीछे', ' पुनः' 'समान' अथवा 'अनुरूप' इससे अनुवाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ स्पष्ट है कि, ''अनुवाद याने पुनः कथन अर्थात किसी के कहने के बाद कहना, समान कथन अर्थात किसी के कथन के समान रूप से कहना, अनुरूप कथन अर्थात किसी के कथन के अनुरूप में कहना ।'' याने एक भाषा में कही गई बात को किसी दूसरी भाषा में फिर से, पुनः, समान या अनुरूप कहना ही अनुवाद है । किसी गणित के एक –एक सोपान को यह हल कर पूरे गणित को हल करने जैसा वैज्ञानिक नहीं और किसी चित्र को रंग और तूलिका के जरिए कल्पना के आधार पर जानदार बनाने जैसा कलात्मक भी नही ।

अनुवाद में अनुवादक की प्रतिभा महत्वपूर्ण होती है । उसकी प्रतिभावान व्यक्तित्व से अनुवाद निश्चय ही प्रभावी होता है । फलतः एक ही रचना का अनुवाद यदि दो अनुवादकों से करवा लिया जाए तो उसमें भिन्नता दिखाई देती है, साथ ही उनकी प्रभाव क्षमता भी भिन्न–भिन्न पायी जाती है । मूल कलाकार आत्माविष्कार, आत्माभिव्यक्ति तथा अपने भावों और विचारों को अपने कृति में उतारता है किन्तु अनुवादक मूल सामग्री को हृदयंगम करके, उसे आत्मगत करके लक्ष्य भाषा में यथावत सम्प्रेषित करता है । मूल को हृदयंगम तथा आत्मगत कर उसे सामान्य रूप से सम्प्रेषित करनेवाला बिंन्दु ही अनुवादक को कला घोषित करता है । डॉ. रीतारानी पालीवाल के विचार से – '' अनुवादक इस अर्थ में कलाकार है कि, वह कलाकार के आत्माभिव्यक्ति को अपने में उतारता है, उससे पुनः आत्मसाक्षात्कार करता है और तटस्थ भाव से उनको पुनः अभिव्यक्त कर देता है । इस अर्थ में अनुवादक का व्यक्तित्व पुनरूत्पादक कलाकार का व्यक्तित्व है ।'' निष्कर्षतः अनुवाद अपने सीमा में निश्चिय ही कला है और अनुवादक कलाकार । साहित्य अनुवादक के संदर्भ में यह बात आधिक तर्क संगत है ।

किसी विषय का सुनिश्चित तथा सुव्यवस्थित ज्ञान ही विज्ञान है । हमारे ज्ञान के क्षेत्र में रसायन, भौतिक, गणित आदि जिस अर्थ में विज्ञान है क्या अनुवाद ही उसे अर्थ में विज्ञान है? अर्थात विज्ञान के इन क्षेत्रो में अपवाद के लिए गुंजाइश नही होती । विज्ञान के सिध्दांत एवं नियम दृढ तथा सार्वभौमिक होते है । इसमें विकल्पों को या आपवादों को बिल्कुल स्थान नहीं होता । जैसे विज्ञान में H_2O है । अर्थात हैड्रोजन के दो तथा ऑक्सिजन का एक अणु मिलाने से पानी बनता है और गणित में 25 + 25 = 50 होता है । इसके ये सिध्दान्त एवं नियम सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक है । इनमें कहीं भी विकल्प अथवा अपवाद को स्थान नहीं है । क्या अनुवाद को हम इस अर्थ में विज्ञान कह सकते है? उत्तर स्पष्ट है कि 'नही' ।

अतः अनुवाद उस अर्थ में विज्ञान नहीं जिस अर्थ में गणित, रसायन, भौतिक आदि विज्ञान है । किन्तु यह उस अर्थ में विज्ञान है कि जिस अर्थ में विज्ञान, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीतिक विज्ञान आदि विज्ञान है । जैसे इन विषयों का अपना शास्त्र है, उनके अपने सिध्दांत तथा नियम निश्चित है और उनका अपना विशिष्ट ज्ञान है जो सिध्दान्तों तथा नियमों में आबध्द होते हुए भी अपवादों से रहित नहीं है, ठीक वैसे ही अनुवाद की बात है ।

अतः अनुवाद को पूर्णतः विशुध्द विज्ञान मानना यथोचित नही होगा । क्योंकि इनके सिध्दांत एवं नियम जिस तरह दृढ होते है और उनमें किसी भी स्थल और काल में अपवादों को स्थान नहीं उस तरह अनुवाद के सिध्दांतों एवं नियमों की बात नहीं है । इनमें दृढता के साथ लचिलापन भी है, विकल्प के लिए गुंजाइश है । किन्तु अनुवाद का भाषा विज्ञान से गहरा सम्बन्ध होने के कारण भाषा में जो ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, शैली, अर्थ आदि की निश्चित व्यवस्था होती है वह वैज्ञानिक होती है और अनुवाद में इसका महत्व अधिक है । स्त्रोत भाषा की ध्वनियों,

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

शब्दों, रूपों, वाक्यविन्यासों तथा अर्थो आदि की सुनिश्चित व्यवस्था को तथा तद्विषयक नियमों को दृष्टि में रखकर अनुवाद करना पडता है, जो वैज्ञानिक होता है । इसी सीमा में अनुवाद को विज्ञान मानना तर्कसंगत है ।

दूसरी बात यह है की अनुाद कि, यह प्रक्रिया वैज्ञानिक है । इसी वैज्ञानिक प्रक्रिया के संदर्भ में वह विज्ञान है । अनुवाद की वैज्ञानिकता से अपरिचित अनुवादक उतना बढिया अनुवाद नही कर पाता जितना इससे सुपरिचित अनुवादक कर पाता है । इसके संबंध में डॉ. भोलानाथ तिवारी का यह कथन द्रष्टव्य है – ''अनुवाद की पृष्ठभूमि में स्थित यह सारा अध्ययन–विश्लेषण विज्ञान के अंतर्गत आता है । अनुवाद के इस विज्ञान –पक्ष से सुपरिचित अनुवादक उस अनुवादक की तुलना में जो इससे परिचित नहीं है कहीं अच्छा अनुवाद कर सकता है ।''

अनुवाद में सिध्दांत, नियम और अभ्यास, अनुभव का योग होता है । इसी प्रवृत्ति के कारण अनुवाद विज्ञान की ओर झुकता है । तीसरी बात यह है कि, अनुवाद के अध्ययन प्रक्रिया का विज्ञान के अध्ययन की प्रक्रिया से साम्य दिखता है । विज्ञान के अनुशील में निरीक्षण, परीक्षण, वर्गीकरण, विश्लेषण, तुलना, निर्धारणसूत्र, नियम, सिध्दान्त और प्राप्त तथ्य आदि कारक महत्वपूर्ण कार्य करते है । लगभग यही कारक अनुवाद की प्रक्रिया में कार्य करते है । विज्ञान के अनुशीलन की प्रक्रिया में 'तटस्थता' अनिवार्य हो जाती है । वैज्ञानिक अपने विषय के अध्ययन में तटस्थ रहता है, उसका अध्ययन (Objective) होता है । यही बात अनुवाद के लिए भी आवश्यक सूत्र बन जाती है । स्त्रोत सामग्री का लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापन करते समय अनुवादक को भी वैज्ञानिक सामने तटस्थ रहना पडता है, उसे स्त्रोत सामग्री का यथावत और वस्तुनिष्ठ करना पडता है । अनुवाद की यही प्रक्रिया निश्चित ही वैज्ञानिक है । अतः अपनी सीमा में अनुवाद विज्ञान है, इसका इन्कार नहीं किया जा सकता ।

अनुवाद को वैज्ञानिक प्रक्रिया इसलिए माना जाता है उसमें विकल्पों का नियंत्रण पूरी तरह से करना संभव है । अनुवाद मे भीं विकल्पों को कॉम्प्यूटर से नियंत्रित किया जा सकता है । इसलिए ओटिंगर ने कहा है कि अनुवाद को वैज्ञानिक प्रक्रिया मानने का ही यह परिणाम है कि आज हम मशिनी अनुवाद के सिध्दांत को विकसित करने में समर्थ हो सके । अनुवाद एक ऐसा वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें आद्यन्त कुछ निश्चित नियमों को मानकर चलना पडता है । इसमें वैज्ञानिक भाषा की भांति शब्दों का नपा – तुला प्रयोग होता है । जिससे अर्थ का भार ज्यादा न पडे न कम । वस्तुनिष्ठता और प्रामाणिकता श्रेष्ठ अनुवादक के गुण है और केवल वैज्ञानिक ढंग से अनुवाद करने पर ही अनुवाद में ये दो गुण आ सकते है । इस प्रकार अनुवाद की यह प्रक्रिया वैज्ञानिक ही होती है । जहॉ वैज्ञानिक या केवल सूचना–प्रधान सामग्री का अनुवाद किया जाता है वहॉ यही प्रक्रिया पूर्णतः लागू होती है । अनुवादक को अपनी तरफ से न कुछ जोडने की जरूरत होती है और न अनुमति।

अनुवादक को कुछ अपवाद छोडकर अनुवाद संबंधी निर्धारित नियमों का अनुसरन करना पडता है । अनुवाद संबंधी बनाये गये नियम वैज्ञानिक होने के कारण आज मशीनी अनुवाद अनुभव हो रहे है । अनुवाद विषयक बनें नियमों में तथा अनुवाद के प्रकिया में वैज्ञानिक के परिणाम स्वरूप अब मशीन द्वारा अनुवाद करा लेने में सफलता प्राप्त हुई है । यदि अनुवाद विषयक नियमों तथा अनुवाद के प्रक्रिया में वैज्ञानिकता का अभाव होता तो मशीनी अनुवाद असंभव हो जाता । डॉ. रीतारानी पालीवाल इस सदर्भ में कहती हैं, – '' यह प्रक्रिया पूरी तरह से वैज्ञानिक है और यदि इसमें वैज्ञानिक नियम न होते तो मशीनी अनुवाद संभव ही नहीं हो सकता था ।''

सामान्य ज्ञान जब विशिष्ट प्रक्रिया में उतरता है और फिर उसके नियम निश्चित हो जाते है तब वह सामान्य ज्ञान नहीं बल्कि विशिष्ट ज्ञान बन जाता है । विशिष्ट ज्ञान के नियम जब अपवाद रहित साबित होते है । अथवा सार्वकालिक तथा सार्वभौम बन जाते है तब वह ज्ञान विशिष्ट न रहकर विशुध्द विज्ञान बन जाता है । विज्ञान से कार्यकारण भाव तथा तथात्मकता की व्यवस्था आधारभूत रहती है । इसी तरह अनुवाद में भी स्त्रोत तथा लक्ष्य भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन – विश्लेषण के व्यवस्था में कार्यकारण भाव तथा तथ्यात्मकता आधारभूत है । फलतः इसी अर्थ में अनुवाद को विज्ञान मानना तर्कसंगत है ।

मौखिक क्षेत्र के बाद अनुवाद की व्याप्ति पत्राचार के क्षेत्र में अधिक मात्रा में है । पत्राचार चाहे बिल्कुल अगल – बगल में स्थित दो भाषाऍ वहा अनुवाद की आवश्यकता है । व्यापार में, कार्यालय, बॅकों, न्यायालयों में पत्राचार का महत्व अनन्य साधारण है । चीन, जापान, जर्मनी जैसे देशों में तो उनकी भाषा के अलावा कोई अन्य भाषा पसंद ही नहीं की जाती । विज्ञान, तकनीकी और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुवाद निरंतर महत्वपूर्ण सिध्द होता है । विकसित देशों की प्रगति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का होता है । इंग्लैंड, अमेरिका, रूस जैसे देश विज्ञान, तकनीक और प्रौद्योगिक के क्षेत्र में अत्याधिक विकास कर चुके है उच्च न्यायालयों की भाषा ॲंग्रेजी होने से मुकदमें के सारे कागद प्रादेशिक भाषा में होते है ।

भाषा – साहित्य के अलावा विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, लोकप्रशासन, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान आदि कई विषय सीखे और सिखाए जाते है । शिक्षा का स्तर भी विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि के

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

दायरे में सिमटकर नहीं रहा है । विदेशी भाषाओं की जानकारी के अभाव में हमारा ज्ञान अधूरा रहने का खतरा ही अधिक मात्रा में होता है । विदेशी भाषा सीखना बडा कठिण कार्य है । इस स्थिति में अनुवाद की मदद मिलती है । जिन विदेशियों को भारतीय संस्कृति या साहित्य संबंधित जानकारी चाहिए उन्हें भी अनुवाद के आलावा कोई चारा नही है ।

संचार माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग नितांत आवश्यक है । समाचार पत्र, रेडिओ, आकाशवाणी और दूरदर्शन संचार का महत्वपूर्ण माध्यम है । सच्चाई यह कि आज भी हिंदी समाचार पत्रों को अंग्रेजी समाचार एंजेसियों पर ही निर्भर रहना पडता है । अनुवाद समाचार पत्रों के लिए अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है । अतः विदेशी भाषा के उस समाचार को अनूदित करके ही हिंदी भाषा में उतारा जा सकता है । विदेशी भाषाएँ विशेषतः अंग्रेजी से समाचार हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित होते रहते है ।

कई महत्वपूर्ण प्रादेशिक समाचार प्रादेशिक समाचार पत्रों में, प्रादेशिक भाषा में छाप दिए जाते है । रेडिओ, दूरदर्शन, फिल्में संचार के माध्यम है । इस माध्यम में अनुवाद की आवश्यकता सर्वाधिक मात्रा में महसूस होती है । फिल्मों में अनुवाद एक पेचीदा काम करता है । इसमें शब्द चयन का महत्व शब्दादित होता है ।

अंतरराष्ट्रीय संबंध अनुवाद का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है । इसमे विशेष रूप से मौखिक अनुवाद होता है । संसद की भॉति शासन तथा प्रशासन में अनुवाद एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है । भारत ने द्विभाषिक नीति को अपना लिया है । पर्यटन में अनुवाद का महत्व वर्णनातीत है । भारतीय प्रवासी फ्रांस का 'आयफेल टावर' या इटली का 'पिसा का झुका हुआ मीनार' देखने तो जा सकते है, लेकिन फ्रेंच या इतालवी भाषा की जानकारी के अभाव में उसके विषय में कुछ जान नहीं सकते ।

दो देशों के सांस्कृतिक संबंधों में सुधार लाने के लिए या संबंध स्थापित करने के लिए अनुवाद से बढकर कोई पुल हो ही नही सकता । भारत की संस्कृति महान है, लेकिन अमेरिकनों को भारत की संस्कृति का परिचय हिंदी में देने से काम नहीं चलेगा । उन्हें उन्हीं की भाषा में भारतीय संस्कृति का परिचय देना होगा । किसी देश की संस्कृति जानने के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण है ।

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद सर्वाधिक प्रभावित हो चुका है । प्रत्येक युग का साहित्य पढकर हम तत्कालीन परिस्थितियों से परिचित हो सकते है । हमारे देश में विभिन्न प्रदेश है । उसके लिए यहॉ संविधान द्वारा स्वीकृत भाषाएँ भारतीय भाषाएँ या प्रादेशिक भाषाओं के नाम से जाने जाते है । अनुवाद के जरिए जिस प्रकार विश्व साहित्य हम तक पहुँच जाता है उसी प्रकार हमारा साहित्य भी तो विश्व स्तर पर पहुँच जाता है । संक्षेप में कह सकते है कि, विश्व भर संभवतः एक भी ऐसा क्षेत्र नही है जहॉ अनुवाद एक वरदान के रूप में विद्यमान नहीं है । यह कहना अतिशोक्ति न होगी कि ईश्वर की तरह अनुवाद का वास और व्याप्ति हर जगह विद्यामान है ।

संक्षेप में अनुवाद को मानवकृत विज्ञान ही समझना चाहिए, जैसा कि भाषा विज्ञान । इसके सिद्धांत प्रसंगादि पर निर्भर होते है और उसके नियम प्राकृतिक विज्ञान के नियमों की तरह सनातन नहीं रहते । फिर भी वैज्ञानिक प्रणाली से अनुवाद के अनेक तत्वों का विश्लेषण संभव है ।

संदर्भ सूची

1. अनुवाद सिध्दांत की रूपरेखा – डॉ. सुरेश कुमार
2. अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
3. अनुवाद सिध्दांत और व्यवहार – डॉ. एस. के शर्मा
4. अनुवाद विज्ञान –सिध्दांत और अनुप्रयोग – संपा. डॉ. नगेंद्र
5. अनुवादः सिध्दांत एवं प्रयोग – डॉ.जी.पी. गोपीनाथन
6. अनुवाद स्वरूप एवं सिध्दांत – डॉ. के. पी. शहा